श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में (Shri Ram Janki Baithe Hain Mere Seene Me)

श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में (Shri Ram Janki Baithe Hain Mere Seene Me)

ना चलाओ बाण,
व्यंग केऐ विभिषण,
ताना ना सह पाऊं
क्यूँ तोड़ी है ये मालायूँ तोड़ी है ये माला,
तुझे ए लंकापति बतलाऊंबतलाऊं
मुझमें भी है तुझमें भी है
ी है,
सब में है समझाऊँ,
ऐ लंकापति विभीषण
ीषण, ले देख,
मैं तुझको आज दिखाऊं खाऊं।
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में,
देख लो मेरे दिल केनगीने में।ल केनगीने में।।
मुझको कीर्तिना वैभव ना यश चाहिए
ए,
राम केनाम का मुझ को रस चाहिए
ए,
सुख मिले ऐसे अमृत को पीने में
ले ऐसे अमृत को पीने में,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में।।
अनमोल कोई भी चीजी चीज,
मेरे काम की नहीं,
दिखती अगर उसमे छविखती अगर उसमे छवि,
सिया राम की नहीं ं।।

राम रसिया हूँ मैं
ूँ मैं, राम सुमिरण करूँ
रण करूँ
सिया राम का सदा ही मै चिंतन करूँंतन करूँ
सच्चा आनंद है ऐसे जीने में,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में ।।

फाड़ सीना हैं, सब को ये दिखला दिया
या,
भक्ति में मस्ती है में मस्ती है, सबको बतला दियाया,
कोई मस्ती ना, सागर को मीने में,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में ।।

श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने मे,
देख लो मेरे दिल केनगीने में ल केनगीने में ॥